समूह की दीदियों को बताया जैविक खाद के फायदे

जैविक खाद बनातीं समूह की दीदियां.

खूंटी जिला अंतर्गत रनिया प्रखंड के गढ़सिदम गांव में आंध्र प्रदेश से आयीं सीआरपी दीदियों ने जैविक खाद बनाने और उसके इस्तेमाल से होनेवाले फायदे के बारे में बताया. ये दीदियां गढ़सिदम गांव में पांच दिनों तक रूकीं. इन पांच दिनों में दीदियों ने समूह की महिला सदस्यों को जैविक खाद बनाने के हर गुर सिखाये. रासायनिक खाद व जैविक खाद के अंतर को समझाया. इसके अलावा दीदियों ने बताया कि जैविक खाद बनाने में लागत भी कम आती है. प्रशिक्षण के दौरान नडेप खाद, घनजीवामृत, द्रव्यजीवामृत, बीजामृत, अजोला फीट आदि के बारे में विस्तार से बताया गया. फसलों में छिड़काव के लिए नीमास्त्र, ब्रह्मास्त्र और अग्नियास्त्र के बारे में भी बताया गया.

अमिता देवी

प्रखंड रनिया
जिला खूंटी

नडेप खाद : यह खाद डीएपी और यूरिया की तरह ही काम करती है. इस खाद को खर-पतवार, घास आदि से तैयार किया जाता है. इस खाद को तैयार करने में तीन महीने का समय लगता है.

घनजीवामृत : यह भी डीएपी की ही तरह काम करती है. इसके निर्माण के लिए गोबर, गुड़, बेसन और गोमूत्र का इस्तेमाल होता है. यह खाद एक सप्ताह में तैयार हो जाता है.

द्रव्यजीवामृत : यह द्रव्य विटामिन की तरह काम करता है. इसे पौधे में डालने से पौधा मजबूत होता है. इसे बनाने में पानी, गोबर, बेसन, गोमूत्र और दीमक की मिट्टी का उपयोग होता है.

बीजामृत : इस दवा का उपयोग बीज व नर्सरी के पौधे को स्वच्छ रखने के लिए होता है. इसे गोबर, गोमूत्र, दीमक की मिट्टी व पानी को मिला कर बनाया जाता है.

अजोला फीट : इसे बनाने के लिए एक फीट गड्ढा बनाना होता है. गड्ढे के ऊपर प्लास्टिक बिछा कर पानी भरा जाता है. इसमें अजोला घास को डाला जाता है. 15 दिन के अंदर यह घास फैल जाता है, तब इसे खेत में छोड़ने से पानी का स्त्रोत कम नहीं होता है.

जैविक खाद की विधि, उसके उपयोग व लाभ के बारे में विस्तार से जानकारी मिलने के बाद समूह की दीदियों ने खुद जैविक खाद बनाने का निर्णय लिया. समूह की दीदियां कहती हैं कि जब से आजीविका से जुड़ीं हूं, हमारे जीवन में कई बदलाव आने लगे हैं.

सरकार गांव से गरीबी दूर करने के लिए प्रयासरत है. झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसायटी यानी जेएसएलपीएस इसमें महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है. सखी मंडल के जरिये गांव की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया जा रहा है, वहीं युवाओं को दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल विकास योजना के तहत हुनरमंद बनाकर रोजगार उपलब्ध कराने की कोशिश की जा रही है, ताकि सभी गरीबी से बाहर निकल सकें. सखी मंडल की दीदियों को आत्मनिर्भर बनाने के साथ-साथ स्वरोजगार से भी जोड़ा जा रहा है. जैविक खेती, उत्पादक समिति, रानी मिस्त्री, बैंक सखी, सूक्ष्म उद्योग सलाहकार आदि से जोड़ कर स्वावलंबी बनाया जा रहा है.

गांव से गरीबी दूर करने में लगा आजीविका मिशन

युवाओं को मिला सूक्ष्म उद्योग का प्रशिक्षण

आजीविका मिशन के तहत गिरिडीह जिला अंतर्गत बेंगाबाद व डुमरी प्रखंड में सूक्ष्म उद्योग सलाहकारों (एमइसी) का प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ. इसका उद्देश्य स्वरोजगार को बढ़ावा देकर गांव से गरीबी दूर करना है. सखी मंडल की दीदियों को विभिन्न उद्योगों को अपनाने के लिए सलाह देकर उन्हें व्यापार के लिए प्रेरित किया जाता है. सूक्ष्म उद्योग को बढ़ावा देना भी इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य है. प्रशिक्षण में बताया गया कि सखी मंडल की दीदियां अपने-अपने समूह से लोन तो लेती हैं और उस लोन का समुचित उपयोग नहीं कर दूसरे कामों में खर्च कर देती हैं. सूक्ष्म उद्योग सलाहकार यानी एमइसी ऐसी दीदियों का चयन करेंगे, जिनमें काम करने की क्षमता, कुशलता, हुनर आदि हो. वैसी दीदियों को काम करने की सलाह दी जायेगी और उनका हौसला बढ़ाया जायेगा. सखी मंडल की दीदियां समूह से लोन लेने पर उस राशि का सही उपयोग करें, इस संबंध में एमइसी उन्हें सहयोग करेगा. इसके अलावा पहले से व्यापार में लगी दीदियों को और अधिक आमदनी करने संबंधी सहयोग भी एसवीइपी के माध्यम से किया जायेगा. सखी मंडल में कई दीदियां भले की कम पढ़ी-लिखी हों, लेकिन उनमें हुनर की कमी नहीं है. तभी तो आज कई क्षेत्र में दीदियां अपना परचम लहरा रही हैं. प्रशिक्षण शिविर में कहा गया कि दीदियां अगर और आमदनी करना चाहती हैं, तो एसवीइपी के माध्यम से ऐसे अवसर का लाभ जरूर उठाएं. इस प्रशिक्षण शिविर में संतोष, प्रीति, राजी समेत अन्य लोग उपस्थित थे.

अनुशिला हेंब्रम

प्रखंड बेंगाबाद
जिला गिरिडीह

प्रशिक्षण शिविर में शामिल लोग.

फिल्म के माध्यम से स्वच्छता का लाभ बतातीं विनीता दीदी

वीणा देवी

प्रखंड मनोहरपुर
जिला प सिंहभूम

पश्चिमी सिंहभूम जिला अंतर्गत मनोहरपुर प्रखंड के हाकागुरइ गांव में सखी मंडल की सदस्य विनीता दीदी महिलाओं को स्वच्छता के प्रति जागरूक कर रही हैं. फिल्म के माध्यम से विनीता दीदी ग्रामीण महिलाओं को स्वच्छता को अपनाने व उससे होनेवाले लाभ के बारे में बताती हैं. आजीविका ग्राम संगठन, हाकागुरइ की बैठक में विनीता दीदी उपस्थित दीदियों को स्वच्छ भारत मिशन के बारे में विस्तार से बताती हैं. दूसरों को आत्मनिर्भर व स्वच्छता के प्रति जागरूक करनेवाली विनीता दीदी पहले खुद आत्मनिर्भर नहीं थीं. आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होने के कारण घर-परिवार चलाना दूभर था. पति भी कुछ काम नहीं करते थे. इस कारण भी गरीबी चरम पर थी. इसी बीच उन्हें स्वयं सहायता समूह के बारे में जानकारी मिली. समूह से जुड़ कर वह बचत पर विशेष जोर देने लगीं. छोटे-छोटे ऋण लेकर अपने परिवार का भरण-पोषण करने लगीं. एक साल बाद विनीता को बड़ी जिम्मेदारी मिली. उन्हें ढीपा संकुल संगठन में सेतु दीदी का काम मिला. इस काम को उन्होंने बखूबी निभाया. जहां पहले विनीता की पहचान नहीं थी, वहीं अब विनीता को सेतु दीदी के तौर पर हर कोई जानने लगा. ग्रामीणों को सरकारी योजनाओं से अवगत करातीं, तो बच्चों को स्कूल भेजने के लिए अभिभावकों को प्रोत्साहित करतीं. अब स्वच्छता मिशन के तहत ग्रामीण महिलाओं को अपने आसपास साफ-सफाई रखने और इससे होनेवाले लाभ के बारे में बता कर उन्हें जागरूक कर रही हैं.

समूह से जुड़ने के बाद रिंकी का जीवन बदला

दूसरी महिलाओं को सिलाई-कढ़ाई सीखातीं रिंकी देवी.

गोड्डा जिला अंतर्गत ठाकुरगंगटी प्रखंड के मोरडीहा गांव की रहनेवाली हैं रिंकी देवी. पूजा स्वयं सहायता समूह से जुड़ी रिंकी देवी आज गांव की महिलाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत बन गयी हैं. रिंकी देवी एक गरीब परिवार से ताल्लुक रखती हैं. समूह से जुड़ने के बाद से रिंकी ने खुद को और अपने परिवार को गरीबी से बाहर निकाला, हालांकि ऐसी स्थिति पहले नहीं थी. पहले पैसों की जरूरत पड़ने पर महाजन से रुपये उधार लेती थीं. ब्याज की दर भी काफी अधिक होती थी. इस कारण उधार चुकाने में ही वह परेशान रहती थीं. उनके पास कोई रोजगार नहीं था. पति की आमदनी भी अधिक नहीं थी. मजदूरी कर किसी तरह से घर-परिवार का भरण-पोषण होता था. बच्चों की पढ़ाई भी प्रभावित होती थी. घर का भी अभाव था. इस कारण रिंकी देवी अपने परिवार के साथ पुआल की छत के नीचे रहने को मजबूर थीं, लेकिन आज रिंकी ढलाई छत वाले घर में रह रही हैं. यह स्थिति उन्होंने साल 2016 में समूह से जुड़ कर और 10-10 रुपये बचत कर हासिल की है. समूह से जुड़ने व सक्रिय रहने के कारण रिंकी ने समूह से पांच हजार रुपये का लोन लेकर एक सिलाई मशीन खरीदी. लोगों के कपड़े सिलने लगीं. धीरे-धीरे आमदनी होने लगी और समूह से लिए लोन को चुकता कर दिया. इसके बाद एक और सिलाई मशीन खरीदीं. अब वह अन्य महिलाओं को सिलाई-कढ़ाई सीखाने लगीं. रिंकी की इच्छा है कि वो सिलाई सेंटर खोलें, ताकि ग्रामीण महिलाओं को सिलाई-कढ़ाई में और निपुण कर सकें. उनके इस व्यवसाय को देख कर समूह की अन्य महिलाएं लोन लेकर अपना कुछ अलग रोजगार करना चाहती हैं. रिंकी देवी कहती हैं कि समूह ने उन्हें राह दिखाया और आज वो काफी खुश हैं.

घर की चहारदीवारी से प्रतिभा का बैंक सखी तक का सफर

पलामू जिला अंतर्गत लेस्लीगंज प्रखंड के पथरही गांव निवासी प्रतिभा, दुर्गा आजीविका स्वयं सहायता समूह की सक्रिय सदस्य हैं. समूह में बुक कीपिंग का कार्य करती हैं. कल तक अपने सखी मंडल का लेखा-जोखा कर रहीं प्रतिभा अब बैंक का लेखा-जोखा कर रही है. पहले वह बैंक जाने से संकोच करती थीं. आज सरलता से बैंक के कार्यों को निबटा रही हैं. सखी मंडल की अन्य दीदियों का कहना है कि बैंक सखी के आ जाने से बैंक के कार्य आसानी से होने लगे हैं. अशिक्षित ग्रामीण महिलाओं के लिए बैंक सखी एक वरदान है. बैंक से संबंधित हर कार्य इन महिलाओं के लिए अब आसान हो गया है. बैंक सखी के माध्यम से समूह की कई अन्य दीदियां ऋण लेकर स्वरोजगार करने लगी हैं. इससे जहां खुद का विकास हो रहा है, वहीं गांव से पलायन भी नहीं हो रहा है. अपने बेहतर कार्य के कारण इनदिनों बैंक सखी प्रतिभा की एक अलग पहचान बन गयी है.

नयनतारा कुमारी

प्रखंड लेस्लीगंज
जिला पलामू

शौचालय बना, चेहरा खिला

गिरिडीह जिले के डुमरी प्रखंड अंतर्गत खुरजियो गांव की महिलाओं के घरों में शौचालय निर्माण से उनके चेहरे पर खुशी आयी है. इनके चेहरे पर खुशी लाने का श्रेय झारखंड राज्य लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी को जाता है. गंगोत्री आजीविका स्वयं सहायता समूह की महिलाओं के घरों में खुरजियो महिला ग्राम संगठन द्वारा शौचालय निर्माण किया जा रहा है. इस संबंध में समूह की दीदी मुंदरी देवी कहती हैं कि शौचालय निर्माण होने से घर-परिवार में खुशहाली आयी है. पहले जब घर में शौचालय नहीं था, तो काफी परेशानी होती थी. समूह से जुड़ने के बाद इस समस्या का समाधान हो गया. अशिक्षित होने के कारण पहले सरकारी योजनाओं का भी लाभ नहीं मिलता था, लेकिन अब ऐसी स्थिति नहीं है. समूह और बैंक से लोन मिलने लगा है, जिससे गांव में ही रोजगार या खेती-बारी होने लगी है. गांव की अन्य महिलाओं के घरों में भी समूह की ओर से शौचालय निर्माण कराया जा रहा है. समूह की सदस्य सोमरी देवी कहती हैं कि सपने में भी नहीं सोचा था कि मेरे घर में शौचालय बनेगा. खुरजियो के अलावा चेंगरो, सेवाटांड़ और मंगलुआहार में शौचालय बनवाया जा रहा है.

मुनिया देवी

प्रखंड डुमरी
जिला गिरिडीह

गांव की गरीबी हो रही है दूर

दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल विकास योजना का लाभ युवा बखूबी ले रहे हैं. राज्य के युवक-युवतियों के हाथों में कौशल हो, इसके लिए प्रशिक्षण भी चल रहा है. इस तरह का प्रयास ग्रामीणों के लिए काफी लाभदायक साबित हो रहा है. अनगड़ा प्रखंड के हेसल गांव में भी प्रशिक्षण केंद्र खोला गया है. इस केंद्र में करीब 90 युवक-युवतियां प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं. इस केंद्र में खूंटी, हजारीबाग, सिमडेगा और लोहरदगा जिले के युवक-युवतियां प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं. इसमें सिलाई-कढ़ाई, इलेक्ट्रिकल व कंप्यूटर का प्रशिक्षण दिया जाता है. एमएस आलम अंसारी कहते हैं कि इस प्रशिक्षण केंद्र में युवकों का दूसरा बैच चल रहा है. हर बैच तीन महीना 13 दिन का होता है. प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे युवाओं को निःशुल्क सुविधा दी जाती है. प्रशिक्षण के उपरांत ऑनजॉब ट्रेनिंग की भी व्यवस्था की जाती है, ताकि युवाओं को नौकरी की चिंता न रहे. प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे युवाओं ने कहा कि दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल विकास योजना इनलोगों के लिए एक नयी राह है. पहले सभी बेरोजगार थे, लेकिन इस योजना ने सबको रोजगार से जोड़ दिया है. अन्य बेरोजगारों को भी इस योजना का लाभ उठाना चाहिए.

रूबी खातून

प्रखंड अनगड़ा
जिला रांची

उत्पादक समूह की बैठक में महिलाओं को मिली जानकारी

पश्चिमी सिंहभूम जिला अंतर्गत हाटगम्हरिया प्रखंड का एक गांव है कुलावुर. इस गांव में ग्रामीण महिलाओं का ग्राम संगठन कार्यरत है. जेएसएलपीएस ने सखी मंडल की दीदियों में गजब का उत्साह भरा है. आजीविका महिला ग्राम संगठन इसी-2 की बैठक बुलायी गयी. इस बैठक में कुसमुंडा कलस्टर के सीसी ओमप्रकाश पंकज व रांची के विमलेश कुमार उपस्थित हुए. बैठक में विमलेश कुमार ने उत्पादक समिति के बारे में विस्तार से जानकारी दी. उन्होंने कहा कि पहले ग्रामीण महिलाओं को उत्पादक समिति के बारे में कोई जानकारी नहीं थी. विमलेश ने उत्पादक समिति के लाभ के बारे में भी बताया. उन्होंने कहा कि उत्पादक समूह को निरंतर चलाने के लिए सरकार एक लाख रुपये देगी, ताकि ग्रामीण महिलाओं का भला हो सके. कृषक मित्र राजश्री गगराई ने कहा कि उत्पादक समिति का गठन अगस्त 2017 में हुआ. गांवों में अंधविश्वास अधिक होने के कारण इस समिति से काफी कम लोग ही जुड़ पाये हैं. अब तक मात्र 49 सदस्य ही इस समिति में हैं. इनमें से 33 सदस्य 50-50 रुपये जमा करते हैं. इस तरह वीओए में 1650 रुपये जमा हो चुके हैं.

सुखमति गगराई

प्रखंड हाटगम्हरिया
जिला प सिंहभूम

कुमारी पूनमवाला

प्रखंड ठाकुरगंगटी
जिला गोड्डा